

# रासायनिक खाद मुक्त कृषि को बढ़ावा देने की आवश्यकता : हरिभाऊ बागड़े

बीकानेर,(कासं)। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में गुरुवार को प्राकृतिक खेती पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ मुच्य अतिथि राजस्थान के राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े, विशिष्ट अतिथि केन्द्रीय कानून एवं न्याय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल, केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ अरूण कुमार ने की।

कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित विद्या मंडप सभागार में संगोष्ठी के शुभारंभ अवसर पर श्रीदूर्गरगड़ विधायक ताराचंद सारस्वत, महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ मनोज दीक्षित, राजुवास के पूर्व कुलपति डॉ ए. के. गहलोत, जिला कलेक्टर नम्रता वृष्णि, एसपी तेजस्विनी गौतम, कृषि विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार देवाराम सैनी, वित्त नियंत्रक राजेन्द्र कुमार खत्री सहित विवि के सभी डीन, डायरेक्टर्स समेत अन्य कार्मिक, किसान, कृषक महिलाएं और स्टूडेंट्स मौजूद थे। राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर द्वारा विकसित फसल अवशेष प्रबंधन मशीन 'स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर' का लोकार्पण भी किया। कार्यक्रम में अतिथियों द्वारा पुस्तिका 'फसल अवशेष प्रबंधन हेतु स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर' का विमोचन किया गया।

समारोह को संबोधित करते हुए राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने कहा कि स्वच्छ पर्यावरण और अच्छे स्वास्थ्य के



स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में प्राकृतिक खेती पर राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह को राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने संबोधित किया।

लिए रासायनिक खाद मुक्त कृषि को बढ़ावा देने की सख्त आवश्यकता है। रासायनिक खाद के अंधाधुंध प्रयोग से जमीन के जीवाणु, असंख्य पक्षी विलुप्त हो चुके हैं और कैंसर रोगी बढ़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि इसी तरह अगर फसलों में रासायनिक खाद का इस्तेमाल होता रहा तो एक रिपोर्ट के मुताबिक भारत में 5 में से एक व्यक्ति को कैंसर होगा। यानि करीब 28 करोड़ लोग कैंसर से ग्रसित होंगे। ऐसे स्थिति में बड़ी संख्या में अस्पताल और डॉक्टर कहां से लायेंगे। उन्होंने किसानों को खेती के साथ पशुपालन को बढ़ावा देकर समन्वित कृषि प्रणाली को अपनाने की

बात कही। साथ ही वारिश के पानी को गांव की सीमा के अंदर ही रोकने और सहेजने की आवश्यकता बताई।

प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय द्वारा राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन को लेकर साधुवाद देते हुए कहा कि इस आयोजन से किसानों में जागरूकता आयेगी। केन्द्रीय कानून एवं न्याय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने कहा कि भारत सरकार खेती को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है। मेघवाल ने प्रसिद्ध लोक गायिका अल्ला जिलाई बाई द्वारा गाए गीत खोखा म्हाने लागे चौखा..., खेजड़लियां रा खजूर..., फोगले रो करां

म्हे रायतो..., जिमां रोटी चूर... गाकर प्राकृतिक खेती और श्रीअन्न को बढ़ावा देने और रोटी चूर के जीमने की बात कही। साथ ही बताया कि 9 दिसम्बर 1925 को फिरोजपुर में नहर का शिलान्यास हुआ था।

इसके 100 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों के तहत प्राकृतिक खेती में अच्छा कार्य करने वाले 100 किसानों को वर्ष 2025 में पुरस्कृत किया जायेगा। मेघवाल ने स्वामी केशवानंद के शिक्षा में योगदान को भी याद किया।

केन्द्रीय कृषि व किसान कल्याण अनुकूल टिकाऊ कृषि को प्रोत्साहन दिया जाता है।

- किसानों को खेती के साथ पशुपालन को बढ़ावा देकर समन्वित कृषि प्रणाली को अपनाने की बात कही।
- प्राकृतिक खेती पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ

भारत सरकार प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने जा रही है। अगर किसी किसान के पास 5 एकड़ भूमि है और उसमें से एक एकड़ भूमि पर वह प्राकृतिक खेती करता है तो उसे 20 हजार रुपए का इन्सियटिव दिया जायेगा। कृषि वैज्ञानिकों ने बहुत अच्छा कार्य किया लेकिन अब खेतों में रासायनिक खाद के अंधाधुंध प्रयोग से भूमि बंजर हो रही है। जिस तरह एक नशा करने वाला बिना नशे के नहीं चलता, उसी प्रकार धरती को भी रासायनिक खाद का एडिक्ट बना दिया गया है। अगर मानव को बचाना है तो प्राकृतिक खेती की ओर जाना होगा।

इससे पूर्व कुलपति डॉ अरूण कुमार ने कार्यक्रम में स्वागत भाषण देते हुए कहा कि प्राकृतिक खेती एक ऐसा तरीका है जिसमें रासायनिक उत्तरकों और कीटनाशकों का उपयोग नहीं किया जाता है और पर्यावरण के

# न्यूनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता और स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती अपनाना जरूरी : राज्यपाल बागडे

**स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम राष्ट्रीय संगोष्ठी प्रारंभ**

बीकानेर, (निसं). राज्यपाल हरि भाऊ बागडे ने कहा कि न्यूनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता और स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती को अपनाना जरूरी है। उन्होंने चिंता जाते हुए कहा कि आज रासायनिक उत्पादकों के उपयोग से जमीन की उर्वरा शक्ति प्रभावित हुई है। मिट्टी के मित्र किटानु और सूखे जीवों की संख्या में नगार्य रह गई है। इन उत्पादकों के कारण आज केसर जैसे असाध्य गोंग के रोगियों की संख्या लगातार बढ़ रही है। राज्यपाल बागडे गुरुवार को कृषि विश्वविद्यालय के विद्या मंडप में प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम विधायक द्वारा दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे।

बागडे ने कहा कि पश्चास स्वल्प पहले तक कोई भी रासायनिक उत्पादकों का उपयोग नहीं करता था। परीक्षितवश इनका उपयोग कुरु हुआ। आज इन उत्पादकों के अनेक उत्पादणम हमारे साथ है। उन्होंने कहा कि आज इतिहास की पुनर्जीवन की जरूरत है और जलनी है की एक बार फिर हम प्राकृतिक खेती की ओर अग्रसर हो। उन्होंने जल संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता देने का आह्वान किया और कहा कि गांव का खानी, गांव में ही रुके,



ऐसे प्रयास किए जाएं। उन्होंने शून्य खर्च आधारित खेती के बारे में चर्चा की और कहा कि यह भूमि अन्नपूर्ण है। सकारात्मक तरीके से इसका जितना उपयोग करेंगे, यह अधिक लाभ देंगे। राज्यपाल ने कहा कि एक दोर वा जब दोस्रे के 40 करोड़ लोगों का पेट भरने हमारे पास पर्याप्त अवलम्बन है। इस दोर में हमारे अवश्यकताओं ने भरपूर मौजूदत की। इसकी बदौलत आज 140 करोड़ देशवासियों का पेट भरने के बाद भी मोटी की स्वास्थ्य प्राप्तिकता है। मोटी के नेतृत्व में किसानों का सम्मान कहा गया है। उन्होंने रासायनिक खेती के दुष्प्रभावों के बारे में चर्चा और कहा कि रासायनिक खेती की ओर लौटना होगा।

उन्होंने स्वामी केशवानंद के शिक्षा के किसानों की आय बढ़ायी। राज्यपाल ने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित संगोष्ठी से प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहन मिलेगा। उन्होंने ऐसे आयोजन समय-समय पर आयोजित करने का आह्वान किया।

केंद्रीय कृषि एवं नवय भवी अर्जुन राम मेधवाल ने कहा कि कृषि और कृषक कल्याण, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सर्वोच्च प्राप्तिकता है। मोटी के नेतृत्व में किसानों का सम्मान कहा गया है। उन्होंने रासायनिक खेती की ओर लौटना होगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोटी का स्वप्न है कि देश का किसान खुलासा हो। मोटी के

कृषि जाने की जरूरत है। केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने कहा कि प्राकृतिक खेती हमारी प्राचीनतम पद्धति है। यह भूमि का प्राकृतिक स्वच्छ बनाए रखती है। इस संगोष्ठी समन्वयक और अधिकारी द्वारा द्वारा आयोजित प्रदर्शनी का अवलोकन किया। संगोष्ठी समन्वयक और अधिकारी द्वारा द्वारा आयोजित प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

उन्होंने स्वामी केशवानंद के शिक्षा के किसानों में दिए गए योगदान को याद किया और कहा कि 9 दिसंबर 1925 को महाराजा गंगासिंह ने नहर लाने की कार्यव्योजना शुरूआत की। उसके सौ वर्ष पूर्ण होने पर बीकानेर के मूलासम के सौ वर्ष कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इसमें ड्रायों, सार्वत्रिक, कृषि, प्रकृतिरिटा आदि के छंड में उत्पादन-व्यवस्था कार्य करने वाली प्रतिभाओं को सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने श्रीअंतर (मोटे अनाज) को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता जताई और कहा कि रासायनिक खेती की ओर लौटना होगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोटी का स्वप्न है कि देश का किसान खुलासा हो। मोटी के



नेतृत्व में भारत सरकार कृषि और किसानों की दला और दिशा सुधारने की कृत संकल्प है। उन्होंने केंद्र सरकार की कृषक कल्याण से जुड़ी योजनाओं और कृषि जित से जुड़ी नियंत्रणों के बारे में चर्चा की। विश्वविद्यालय के कृतसंति द्वारा अल्प कुमार ने स्वागत द्वारा दिया। उन्होंने विश्वविद्यालय की विभिन्न गतिविधियों के बारे में चर्चा। साथ ही संगोष्ठी के सत्रों एवं विषयों की जानकारी दी। इस दौरान राज्यपाल बागडे ने फसल अवशेष प्रबंधन हेतु स्टूडेंट चैम्प मह स्प्रॉडर पुस्तक का विमोचन किया। बागडे ने विश्वविद्यालय द्वारा विकसित स्टूडेंट चैम्प मह स्प्रॉडर का लैक्सारी प्रदान किया और विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित प्रदर्शनी का अवलोकन किया। संगोष्ठी समन्वयक और अधिकारी द्वारा द्वारा आयोजित प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

# कृषि विश्वविद्यालय में 'प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम' राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ रसायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध प्रयोग से बढ़ रहे असाध्य रोग, प्राकृतिक खेती अपनाना ही विकल्प: राज्यपाल

सिटी रिपोर्टर | बीकानेर

राज्यपाल हारि भाऊ बागडे ने कहा कि कम लागत में अधिक उपज और स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती को अपनाना जरूरी है। आज रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से जमीन की उर्वरा शक्ति प्रभावित हुई है। मिट्टी के मित्र किटाणु और सूक्ष्म जीवों की संख्या में नगण्य रह गई है। इन उर्वरकों के कारण आज कैसर जैसे असाध्य रोग के रोगियों की संख्या लगातार बढ़ रही है। राज्यपाल बागडे गुरुवार को कृषि विश्वविद्यालय के विद्या मंडप में 'प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पचास साल पहले तक कोई भी रासायनिक उर्वरकों का उपयोग नहीं करता था। परिस्थितिवश इनका



उपयोग शुरू हुआ। आज इन उर्वरकों के अनेक दुष्परिणाम हमारे सामने हैं। जरूरी है कि एक बार फिर हम प्राकृतिक खेती की ओर अग्रसर हों। उन्होंने जल संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता देने का आह्वान किया और कहा कि गांव का पानी, गांव

में ही रुके, ऐसे प्रयास किए जाएं। उन्होंने शून्य खर्च आधारित खेती के बारे में बताया और कहा कि यह भूमि अनपूर्णा है। सकारात्मक तरीके से इसका जितना उपयोग करेंगे, यह अधिक लाभ देंगे। केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने

कहा कि कृषि और कृषक कल्याण, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सर्वोच्च प्राथमिकता है। मोदी के नेतृत्व में किसानों का सम्मान बढ़ा है। उन्होंने रासायनिक खेती के दुष्प्रभावों के बारे में बताया और कहा कि हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। केंद्रीय शामिल हुए।

कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने कहा कि प्राकृतिक खेती हमारी प्राचीनतम पद्धति है। यह भूमि का प्राकृतिक स्वरूप बनाए रखती है। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने विश्वविद्यालय की विभिन्न गतिविधियों के बारे में बताया। साथ ही संगोष्ठी के सत्रों एवं विषयों की जानकारी दी। इस दौरान राज्यपाल बागडे ने 'फसल अवशेष प्रबंधन हेतु स्टबल चॉपर सह स्प्रेडर' पुस्तक का विमोचन किया। कार्यक्रम में श्रीदूर्गराम विधायक ताराचंद सारस्वत, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित, जिला कलेक्टर नम्रता वृष्णि, पुलिस अधीक्षक तेजस्विनी गौतम, राजूवास के पूर्व कुलपति प्रो.एके गहलोत, विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. देवराम सैनी सहित किसान, कृषि वैज्ञानिक और विद्यार्थी शामिल हुए।

## राष्ट्रीय संगोष्ठी में बोले राज्यपाल हरिभाऊ बागडे

# प्राकृतिक खेती की ओर लौटना जरूरी, क्योंकि नष्ट हो रही भूमि की उर्वरा शक्ति



मंच पर पुस्तक का विमोचन करने के बाद संबोधन देते राज्यपाल।

**बीकानेर @ पत्रिका.** एक दौर था जब 40 करोड़ लोगों का पेट भरने को हमारे पास पर्याप्त अन्न नहीं था। अन्नदाताओं ने भरपूर मेहनत की। आज 140 करोड़ देशवासियों का पेट भरने के बाद भी हमारे अन्न के भंडार भरे हुए हैं। यह कहना है राज्यपाल हरिभाऊ बागडे का। वे स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विवि में प्राकृतिक खेती पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि न्यूनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता और स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती को अपनाना जरूरी है। आज रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से जमीन की उर्वरा शक्ति प्रभावित हुई है। कैसर जैसे असाध्य रोग से पीड़ितों की संख्या लगातार बढ़ रही है।

## पहले ऐसा नहीं था

राज्यपाल ने कहा कि 50 साल पहले तक रासायनिक उर्वरकों का उपयोग नहीं होता था। परिस्थितिवश इनका उपयोग शुरू हुआ। दुष्परिणाम सामने हैं। जरूरी है कि एक बार फिर हम प्राकृतिक खेती की ओर लौटें। उन्होंने कहा कि गांव का पानी, गांव में ही

रुके, ऐसे प्रयास किए जाएं। उन्होंने शून्य खर्च आधारित खेती के बारे में भी बताया और कहा कि यह भूमि अन्नपूर्ण है।

## ... म्हाने प्यारों लागे सा

केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने एक दोहा खोखा म्हाने लागे चौखा खेजड़वीयां रा खजूर, फोगले रो करा म्हें रायतों जीमा रोटी चूर... म्हामे प्यारों लागे सा गाकर सुनाया। उन्होंने श्रीअन्न (मोटे अनाज) को प्रोत्साहित करने और राजस्थानी बनस्पति फोगला, केर, सांगरी और तुंबा आदि पर अनुसंधान की जरूरत बताई। केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने कहा कि प्राकृतिक खेती भूमि का प्राकृतिक स्वरूप बनाए रखती है।

## सहायक सिद्ध मशीन

राज्यपाल ने कृषि विवि में विकसित फसल अवशेष प्रबंधन मशीन स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर का लोकार्पण भी किया। इस मशीन को भारत सरकार और यूके से पेटेंट भी मिल चुका है। यह मशीन उत्तर भारत में पराली जलाने की समस्या से



निजात दिलाने में सहायक सिद्ध होगी। इस दौरान कुलपति डॉ. अरुण कुमार, श्रीदूंगरगढ़ विधायक ताराचंद सारस्वत, एमजीएसयू के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित, कलक्टर नम्रता वृष्णि, एसपी तेजस्वनी गौतम, प्रो. एके गहलोत, कुलसचिव डॉ. देवाराम सैनी आदि मौजूद रहे।

## आज आएंगे गुजरात के राज्यपाल

संगोष्ठी का समापन शुक्रवार को होगा। संगोष्ठी संयोजक डॉ. पीके यादव ने बताया कि समापन समारोह के मुख्य अतिथि गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत, विशिष्ट अतिथि देवीसिंह भाटी और गुजरात प्राकृतिक खेती विवि के कुलपति डॉ. सीके टिम्बडिया होंगे। समापन समारोह में कृषि विवि बीकानेर व गुजरात के प्राकृतिक खेती विज्ञान विवि के मध्य एमओयू भी होगा।



# न्यूनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता और स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती अपनाना जरूरी : राज्यपाल बागडे

» स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में 'प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम' राष्ट्रीय संगोष्ठी प्रारंभ

## राजस्थानी चिराग रिपोर्टर

**बीकानेर।** राज्यपाल हरि भाऊ बागडे ने कहा कि न्यूनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता और स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती को अपनाना जरूरी है। उन्होंने चिंता जताते हुए कहा कि आज रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से जमीन की उर्वरा शक्ति प्रभावित हुई है। मिट्टी के मित्र किटाणु और सूक्ष्म जीवों की संख्या में नगण्य रह गई है। इन उर्वरकों के कारण आज केंसर जैसे असाध्य रोग के रोगियों की संख्या लगातार बढ़ रही है।

राज्यपाल बागडे गुरुवार को कृषि विश्वविद्यालय के विद्या मंडप में 'प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे।

बागडे ने कहा कि पचास साल पहले तक कोई भी रासायनिक उर्वरकों का उपयोग नहीं करता था। परिस्थितिवश इनका उपयोग शुरू हुआ। आज इन उर्वरकों के अनेक दुष्परिणाम हमारे सामने हैं। उन्होंने कहा कि आज इतिहास की पुनर्रचना की जरूरत है और जरूरी है की एक बार फिर हम प्राकृतिक खेती की ओर अग्रसर हों। उन्होंने जल संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता देने का आह्वान किया और कहा कि गांव का पानी, गांव में ही रुके, ऐसे प्रयास किए जाएं। उन्होंने शून्य खर्च आधारित खेती के बारे में बताया और कहा कि यह भूमि अन्नपूर्णा है। सकारात्मक तरीके से इसका जितना उपयोग करेंगे, यह अधिक लाभ देगी।

केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि कृषि और कृषक



## कृषि और पशुपालन से किसानों की आय बढ़ेगी : राज्यपाल

राज्यपाल ने कहा कि एक दौर था जब देश के 40 करोड़ लोगों का पेट भरने हमारे पास पर्याप्त अन्न नहीं था। इस दौर में हमारे अन्नदाताओं ने भरपूर मेहनत की। इसकी बदौलत आज 140 करोड़ देशवासियों का पेट भरने के बाद भी हमारे अन्न के भंडार भरे हुए हैं।

उन्होंने कृषि के साथ गोपालन करने का आह्वान किया। प्रदेश की गो आधारित सहकारिता कार्यों की सराहना की और कहा कि कृषि और पशुपालन से किसानों की आय बढ़ेगी। राज्यपाल ने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित संगोष्ठी से प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहन मिलेगा। उन्होंने ऐसे आयोजन समय-समय पर आयोजित करने का आह्वान किया।

कल्याण, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सर्वोच्च प्राथमिकता है। मोदी के नेतृत्व में किसानों का सम्मान बढ़ा है। उन्होंने रासायनिक खेती के दुष्प्रभावों के बारे में बताया और कहा कि हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। उन्होंने स्वामी केशवानंद के शिक्षा के विकास में दिए गए योगदान को याद किया और कहा कि 9 दिसंबर 1925 को महाराजा गंगासिंह ने नहर लाने की कार्ययोजना शुरूआत की। उसके सौ वर्ष पूर्ण होने पर 'बीकानेर के सुशासन के सौ वर्ष' कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इसमें उद्योग, साहित्य, कृषि, पत्रकारिता आदि

के क्षेत्र में उद्घोषित कार्य करने वाली प्रतिभाओं को सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने श्रीअन्न (मोटे अनाज) को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता जताई और कहा कि राजस्थानी वनस्पति फोगला, केर, सांगरी और तुंबा आदि पर अनुसंधान किए जाने की जरूरत है। केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने कहा कि प्राकृतिक खेती हमारी प्राचीनतम पद्धति है। यह भूमि का प्राकृतिक स्वरूप बनाए रखती है। इस खेती में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग नहीं किया जाता है। उन्होंने कहा कि

आज रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध उपयोग के कारण भूमि की उर्वरा शक्ति प्रभावित कर रहा है। मानव के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का स्वप्न है कि देश का किसान खुशहाल हो। मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार कृषि और किसानों की दशा और दिशा सुधारने को कृत संकल्प है। उन्होंने केंद्र सरकार की कृषक कल्याण से जुड़ी योजनाओं और कृषि हित से जुड़े निर्णयों के बारे में बताया।

विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरुण कुमार ने स्वागत उद्घोषन किया। उन्होंने विश्वविद्यालय की विभिन्न गतिविधियों के बारे में बताया। साथ ही संगोष्ठी के सत्रों एवं विषयों की जानकारी दी।

इस दौरान राज्यपाल बागडे ने 'फसल अवशेष प्रबंधन हेतु स्टबल चॉपर सह स्प्रेडर' पुस्तक का विमोचन किया। बागडे ने विश्वविद्यालय द्वारा विकसित स्टबल चॉपर सह स्प्रेडर का लोकार्पण किया और विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित प्रदर्शनी का अवलोकन किया। संगोष्ठी समन्वयक और अधिष्ठाता डॉ. पी.के. यादव ने आभार जताया। कार्यक्रम में श्रीदूर्गराम विधायक ताराचंद सारस्वत, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित, जिला कलेक्टर श्रीमती नम्रता वृष्णि, पुलिस अधीक्षक श्रीमती तेजस्विनी गौतम, राजूवास के पूर्व कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत, विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. देवाराम सैनी सहित किसान, कृषि वैज्ञानिक और विद्यार्थी मौजूद रहे।

# स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती अपनाना जरूरी: राज्यपाल बागड़े

## कृषि विश्वविद्यालय में प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम राष्ट्रीय संगोष्ठी शुरू

नवज्योति। न्यूज सर्विस

बीकानेर। राज्यपाल हरि भाऊ बागड़े ने कहा कि न्यूनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता और स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती को अपनाना जरूरी है। बागड़े गुरुवार को कृषि विश्वविद्यालय के विद्या मंडप में 'प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने चिंता जताते हुए कहा कि आज रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से जमीन की उर्वरा शक्ति प्रभावित हुई है। उर्वरकों के अनेक दुष्परिणाम हमारे सामने हैं। जरूरी है की एक बार फिर हम प्राकृतिक खेती की ओर अग्रसर हों। राज्यपाल ने प्रदेश की गो आधारित सहकारिता कार्यों की सराहना की और कहा कि कृषि और पशुपालन से किसानों की आय बढ़ेगी।

### मोटे अनाज को प्रोत्साहित करने की जरूरत: मेधवाल

केन्द्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेधवाल ने रासायनिक खेती के दुष्प्रभावों



के बारे में बताया और कहा कि हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। उन्होंने मोटे अनाज को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता जताई और कहा कि राजस्थानी वनस्पति फोगला, केर, सांगरी और तुंबा आदि पर अनुसंधान किए जाने की जरूरत है।

केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने कहा कि मानव के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। उन्होंने कहा कि आज रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध उपयोग के कारण भूमि की उर्वरा शक्ति प्रभावित कर रहा है। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ। अरुण कुमार ने स्वागत उद्घोषणा की।

### आज होगा एमओयू

बीकानेर। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में प्राकृतिक खेती पर चल रही दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन शुक्रवार को होगा। समापन समारोह में स्वामी केशव अनंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर और गुजरात के प्राकृतिक खेती विज्ञान विश्वविद्यालय के मध्य एमओयू भी होंगा। साथ ही पोर्टर प्रस्तुति में डल्कृष्ट प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र का वितरण किया जाएगा। संगोष्ठी संयोजक डॉ पीके यादव ने बताया समापन समारोह के मुख्य अतिथि गुजरात के राज्यपाल आचार्य देववन और विशिष्ट अतिथि फूर्व कैविनेट मंत्री देवी सिंह भाटी और गुजरात प्राकृतिक खेती विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ सीके टिम्ब दिया होंगा। संगोष्ठी में पहले दिन तकनीकी सत्र का आयोजन कुलपति डॉ। अरुण कुमार की अध्यक्षता और अनुसंधान निदेशक डॉ। विजय प्रकाश की सह अध्यक्षता में आयोजित किया गया। वहाँ, संगोष्ठी के दूसरे दो तकनीकी सत्रों का आयोजन किया जाएगा।

# पर्यावरण शुद्धता के लिए प्राकृतिक खेती अपनाना जरूरी : राज्यपाल



कामयाब कलम रिपोर्टर।

बीकानेर। राज्यपाल हरि भाऊ बागडे ने कहा कि न्यूनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता और स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती को अपनाना जरूरी है। उन्होंने चिंता जताते हुए कहा कि आज रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से जमीन की

उर्वरा शक्ति प्रभावित हुई है। मिट्टी के मित्र किटाणु और सूक्ष्म जीवों की संख्या में नगण्य रुद्धि है। इन उर्वरकों के कारण आज केंसर जैसे असाध्य रोग के रोगियों की संख्या लगातार बढ़ रही है। वे गुरुवार को कृषि विश्वविद्यालय के विद्या मंडप में 'प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के



उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पचास साल पहले तक कोई भी रासायनिक उर्वरकों का उपयोग नहीं करता था। परिस्थितिवश इनका उपयोग शुरू हुआ। आज इन उर्वरकों के अनेक दुष्परिणाम हमारे सामने हैं। उन्होंने कहा कि आज इतिहास की पुनरावृत्ति की जरूरत है और जरूरी है की एक बार फिर हम प्राकृतिक खेती की ओर

अग्रसर हों। उन्होंने जल संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता देने का आह्वान किया और कहा कि गांव का पानी, गांव में ही रुके, ऐसे प्रयास किए जाएं। उन्होंने शून्य खर्च आधारित खेती के बारे में बताया और कहा कि यह भूमि अन्नपूर्णा है। सकारात्मक तरीके से इसका जितना उपयोग करेंगे, यह अधिक लाभ देगी।

## आज भरे हुए है हमारे अन्न भंडार

राज्यपाल ने कहा कि एक दौर था जब देश के 40 करोड़ लोगों का पेट भरने हमारे पास पर्याप्त अन्न नहीं था। इस दौर में हमारे अन्नदाताओं ने भरपूर मेहनत की। इसकी बदौलत आज 140 करोड़ देशवासियों का पेट भरने के बाद भी हमारे अन्न के भंडार भरे हुए हैं। उन्होंने कृषि के साथ गोपालन करने का आह्वान किया। प्रदेश की गो आधारित सहकारिता कार्यों की सराहना की और कहा कि कृषि और पशुपालन से किसानों की आय बढ़ेगी। राज्यपाल ने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित संगोष्ठी से प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहन मिलेगा। उन्होंने ऐसे आयोजन समय-समय पर आयोजित करने का आह्वान किया।

## हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा-अर्जुनराम मेघवाल

संगोष्ठी में कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि कृषि और कृषक कल्याण, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सर्वोच्च प्राथमिकता है। श्री मोदी के नेतृत्व में किसानों का सम्मान बढ़ा है। उन्होंने रासायनिक खेती के उद्धाराओं के बारे में बताया और कहा कि हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। उन्होंने स्वामी केशवानंद के शिक्षा के विकास में दिए गए योगदान को याद किया और कहा कि 9 दिसंबर 1925 को महाराजा गंगासिंह ने नहर लाने की कार्ययोजना शुरू आत की। उसके सौ वर्ष पूर्ण होने पर 'बीकानेर के सुशासन के सौ वर्ष' कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इसमें उद्योग, साहित्य, कृषि, पत्रकारिता आदि के क्षेत्र में उद्घारणीय कार्य करने वाली प्रतिभाओं को सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने श्रीअन्न को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता जताई और कहा कि राजस्थानी बनस्पति फोगला, केर, सांगरी और तुबा आदि पर अनुसंधान किए जाने की जरूरत है।

## रसायनिक उर्वरकों से खत्म हो रही खेतों में उर्वरा शक्ति-सीआर चौधरी

संगोष्ठी में केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने कहा कि प्राकृतिक खेती हमारी प्राचीनतम पद्धति है। यह भूमि का प्राकृतिक स्वरूप बनाए रखती है। इस खेती में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग नहीं किया जाता है। उन्होंने कहा कि आज रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध उपयोग के कारण भूमि की उर्वरा शक्ति प्रभावित कर रही है। मानव के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का स्वप्न है कि देश का किसान खुशहाल हो। श्री मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार कृषि और किसानों की दशा और दिशा सुधारने को कृत संकल्प है। उन्होंने केंद्र सरकार की कृषक कल्याण से जुड़ी योजनाओं और कृषि हित से जुड़े निर्णयों के बारे में बताया।

## यह भी रहे मौजूद

संगोष्ठी में विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरुण कुमार, अधिकारी डॉ. पी.के. यादव, श्रीदूंगराम विधायक ताराचंद सारस्वत, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित, जिला कलेक्टर श्रीमती नम्रता वृष्णि, पुलिस अधीक्षक श्रीमती तेजस्विनी गौतम, राज्यवास के पूर्व कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत, विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. देवराम सैनी सहित किसान, कृषि वैज्ञानिक और विद्यार्थी मौजूद रहे।

# हुक्मनामा समाचार

hukmnama@gmail.com

राज्यपाल ने कृषि विश्वविद्यालय के विद्या मंडप में प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर कहा-

## न्यूनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता और स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती अपनाना जरूरी

बीकौंनेर, (हुक्मनामा समाचार)। राज्यपाल हरि भाऊ बांगड़े ने कहा कि न्यूनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता और स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती को अपनाना जरूरी है। उन्होंने चिंता जताते हुए कहा कि आज रासायनिक उत्पादकों के उपयोग से जमीन की उत्तरीशक्ति प्रभावित हुई है। भिन्नी के भित्र किटाणु और मुख्य जीवों की संख्या में नाश्य रह गई है। इन उत्पादकों के कारण आज केसर जैसे असाध्य रोग के रोगियों की संख्या लगातार बढ़ रही है। राज्यपाल बांगड़े गुरुवार को कृषि विश्वविद्यालय के विद्या मंडप में %प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम% विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे। बांगड़े ने कहा कि पचास साल पहले तक कोई भी रासायनिक उत्पादकों का उपयोग नहीं करता था। परिस्थितिवश इनका उपयोग शुरू हुआ। आज इन उत्पादकों के अनेक दुष्परिणाम हमारे सामने हैं। उन्होंने कहा कि आज इतिहास की पुनरावृत्ति की जहरत है और



जहरी है की एक बार फिर हम प्राकृतिक खेती की ओर अग्रसर हों। उन्होंने जल संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता देने का आह्वान किया और कहा कि गांव का पानी, गांव में ही रुके, ऐसे प्रयास किए जाएं। उन्होंने शून्य खर्च आधारित खेती के बारे में बताया और कहा कि यह भूमि अन्पूर्ण है। सकारात्मक तरीके से इसका जितना उपयोग करेंगे, वह अधिक लाभ देंगी। राज्यपाल ने कहा कि एक दौर या जब देश के 40 करोड़ लोगों का पेट भरने

हमारे पास पर्याप्त अन्न नहीं था। इस दौर में हमारे अनन्दाताओं ने भरपूर मेहनत की। इसकी बदीलत आज 140 करोड़ देशवासियों का पेट भरने के बाद भी हमारे अन्न के भंडार भरे हुए हैं। उन्होंने कृषि के साथ गोवालन करने का आह्वान किया। प्रदेश की गो आधारित सहकारिता कार्यों की समराजना की और कहा कि कृषि और पशुपालन से किसानों की आय बढ़ेगी। राज्यपाल ने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित संगोष्ठी में प्राकृतिक खेती को

प्रोत्साहन मिलेगा। उन्होंने ऐसे आयोजन समय-समय पर आयोजित करने का आह्वान किया। केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि कृषि और कषक कल्याण, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की सर्वोच्च प्राथमिकता है। श्री मोदी के नेतृत्व में किसानों का समान बढ़ा है। उन्होंने रासायनिक खेती के दुष्प्रभावों के बारे में बताया और कहा कि हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटा होगा। उन्होंने स्वामी केशवानंद के शिष्यों के

विकास में दिए गए योगदान को याद किया और कहा कि 9 दिसंबर 1925 को महाराजा गंगासिंह ने नहर लाने की कार्ययोजना शुरूआत की। उसके सीधे वर्ष पूर्ण होने पर ५८वीं कानेर के सुशासन के स्थीर वर्ष% कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इसमें उपयोग, साहित्य, कृषि, प्रकारिता आदि के क्षेत्र में उत्तराधीनीय कार्य करने वाली प्रतिभाओं को सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने श्रीअन (मोटे अनाज) को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता जताई और कहा कि राजस्थानी बनस्पति फोगला, केर, सांगीरी और तुंबा आदि पर अनुसंधान किए जाने की जरूरत है। केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने कहा कि प्राकृतिक खेती हमारी प्राचीनतम पद्धति है। यह भूमि का प्राकृतिक स्वरूप बनाए रखती है। इस खेती में रासायनिक उत्पादकों और कीटनाशकों का उपयोग नहीं किया जाता है। उन्होंने कहा कि आज रासायनिक उत्पादकों के अंधारूप उपयोग के कारण भूमि की उत्तरी शक्ति प्रभावित कर रहा है।

राष्ट्रीय संगोष्ठी में बोले राज्यपाल हरिभाऊ बागडे

# प्राकृतिक खेती की ओर लौटना जरूरी, क्योंकि नष्ट हो रही भूमि की उर्वरा शक्ति



मंच पर पुस्तक का विमोचन करने के बाद संबोधन देते राज्यपाल।

बीकानेर @ पत्रिका. एक दौर था जब 40 करोड़ लोगों का पेट भरने को हमारे पास पर्याप्त अन्न नहीं था। अननदाताओं ने भरपूर मेहनत की। आज 140 करोड़ देशवासियों का पेट भरने के बाद भी हमारे अन्न के भंडार भरे हुए हैं। यह कहना है राज्यपाल हरिभाऊ बागडे का। वे स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विवि में प्राकृतिक खेती पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि न्यूनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता और स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती को अपनाना जरूरी है। आज रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से जमीन की उर्वरा शक्ति प्रभावित हुई है। कैसर जैसे असाध्य रोग से पीड़ितों की संख्या लगातार बढ़ रही है।

## पहले ऐसा नहीं था

राज्यपाल ने कहा कि 50 साल पहले तक रासायनिक उर्वरकों का उपयोग नहीं होता था। परिस्थितिवश इनका उपयोग शुरू हुआ। दुष्परिणाम सामने हैं। जरूरी है कि एक बार फिर हम प्राकृतिक खेती की ओर लौटें। उन्होंने कहा कि गांव का पानी, गांव में ही

रुके, ऐसे प्रयास किए जाएं। उन्होंने शून्य खर्च आधारित खेती के बारे में भी बताया और कहा कि यह भूमि अन्नपूर्णा है।

## ... म्हाने प्यारों लागे सा

केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने एक दोहा खोखा म्हाने लागे चौखा खेजड़व्यीयां रा खजूर, फोगले रो करा म्हें रायतों जीमा रोटी चूर... म्हाने प्यारों लागे सा गाकर सुनाया। उन्होंने श्रीअन्न (मोटे अनाज) को प्रोत्साहित करने और राजस्थानी वनस्पति फोगला, केर, सांगरी और तुंबा आदि पर अनुसंधान की जरूरत बताई। केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने कहा कि प्राकृतिक खेती भूमि का प्राकृतिक स्वरूप बनाए रखती है।

## सहायक सिद्ध मशीन

राज्यपाल ने कृषि विवि में विकसित फसल अवशेष प्रबंधन मशीन स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर का लोकार्पण भी किया। इस मशीन को भारत सरकार और यूके से पेटेंट भी मिल चुका है। यह मशीन उत्तर भारत में पराली जलाने की समस्या से



निजात दिलाने में सहायक सिद्ध होगी। इस दौरान कुलपति डॉ. अरुण कुमार, श्रीदूंगरगढ़ विधायक ताराचंद सारस्वत, एमजीएसयू के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित, कलक्टर नम्रता वृष्णि, एसपी तेजस्वनी गौतम, प्रो. एके गहलोत, कुलसचिव डॉ. देवराम सैनी आदि मौजूद रहे।

## आज आएंगे गुजरात के राज्यपाल

संगोष्ठी का समापन, शुक्रवार को होगा। संगोष्ठी संयोजक डॉ. पीके यादव ने बताया कि समापन समारोह के मुख्य अतिथि गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत, विशिष्ट अतिथि देवीसिंह भाटी और गुजरात प्राकृतिक खेती विवि के कुलपति डॉ. सीके टिम्बडिया होंगे। समापन समारोह में कृषि विवि बीकानेर व गुजरात के प्राकृतिक खेती विज्ञान विवि के मध्य एमओयू भी होगा।

दैनिक भास्कर

बीकानेर

# कृषि विश्वविद्यालय में 'प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम' राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ रसायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध प्रयोग से बढ़ रहे असाध्य रोग, प्राकृतिक खेती अपनाना ही विकल्प: राज्यपाल

सिटी रिपोर्टर | बीकानेर

राज्यपाल शरि भाऊ बागडे ने कहा कि कम लागत में अधिक उपज और स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती को अपनाना जरूरी है। आज रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से जमीन की उर्वारा शक्ति प्रभावित हुई है। मिट्टी के मित्र किटाणु और सूखम जीवों की संख्या में नगण्य रह गई है। इन उर्वरकों के कारण आज कैसर जैसे असाध्य रोग के रोगियों की संख्या लगातार बढ़ रही है। राज्यपाल बागडे गुरुवार को कृषि विश्वविद्यालय के विद्या मंडप में 'प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम' विश्वक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पचास साल पहले तक कोई भी रासायनिक उर्वरकों का उपयोग नहीं करता था। परिस्थितिवश इनका



उपयोग शुरू हुआ। आज इन उर्वरकों के अनेक दुष्परिणाम हमारे सामने हैं। जरूरी है कि एक बार फिर हम प्राकृतिक खेती की ओर अग्रसर हों। उन्होंने जल संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता देने का आह्वान किया और कहा कि गंव का पानी, गंव

में ही रुके, ऐसे प्रयास किए जाएं। उन्होंने शून्य खुचं आधारित खेती के बारे में बताया और कहा कि यह भूमि अन्नपूर्णा है। सकारात्मक तरीके से इसका जितना उपयोग करेंगे, यह अधिक लाभ देंगे। केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अजुन राम मेघवाल ने

कहा कि कृषि और कृषक कल्याण, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सर्वोच्च प्राथमिकता है। मोदी के नेतृत्व में किसानों का सम्मान बढ़ा है। उन्होंने रासायनिक खेती के दुष्प्रभावों के बारे में बताया और कहा कि हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। केंद्रीय

कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने कहा कि प्राकृतिक खेती हमारी प्राचीनतम पद्धति है। यह भूमि का प्राकृतिक स्वरूप बनाए रखती है। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने विश्वविद्यालय की विभिन्न गतिविधियों के बारे में बताया। साथ ही संगोष्ठी के सत्रों एवं विषयों की जानकारी दी। इस दौरान राज्यपाल बागडे ने 'फसल अवशेष प्रबंधन हेतु स्टबल चौपर सह स्प्रेडर' पुस्तक का विमोचन किया। कार्यक्रम में श्रीदुर्गागढ़ विधायक ताराचंद सारस्वत, महाराजा गंगा मिंह विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित, जिला कलेक्टर नम्रता वर्णि, पुलिस अधीक्षक तेजस्विनी गौतम, राज्यवास के पूर्व कुलपति प्रो.एके गहलात, विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. देवाराम सैनी सहित किसान, कृषि वैज्ञानिक और विद्यार्थी शामिल हुए।

# स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती जरूरी - राज्यपाल

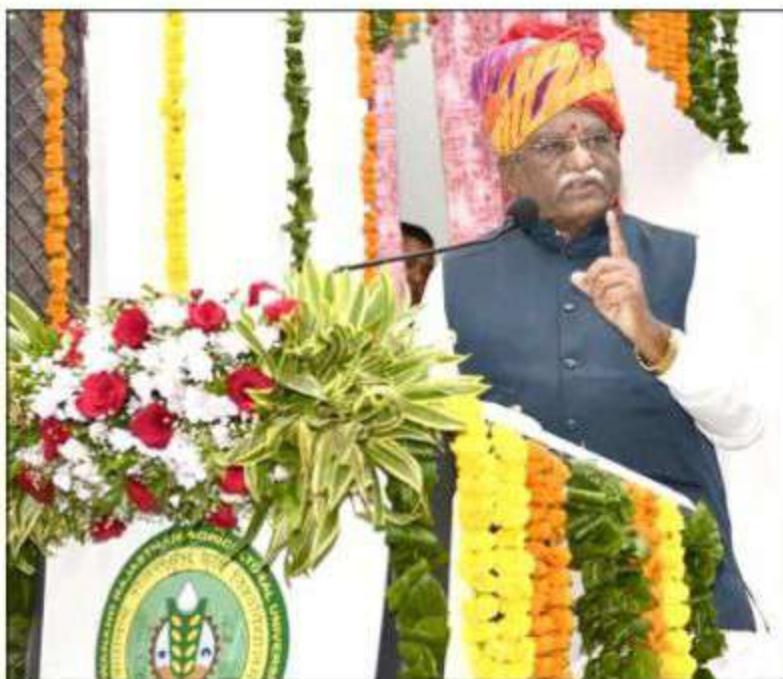
» रासायनिक उर्वरकों से कैंसर रोगियों की संख्या बढ़ रही

इबादत न्यूज

बीकानेर, 29 अगस्त। राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने कहा कि स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती अपनाए जाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से जमीन की उर्वरा शक्ति क्षीण हो रही है। इनके अंधाधुंध उपयोग से कैंसर जैसे असाध्य रोगियों की संख्या भी बढ़ रही है। राज्यपाल बागडे गुरुवार को बीकानेर में कृषि विश्वविद्यालय के विद्यामंडप में 'प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे।

बागडे ने कहा कि पचास साल पहले तक कोई भी रासायनिक उर्वरकों का उपयोग नहीं करता था। परिस्थितिवश इनका उपयोग शुरू हुआ। आज इन उर्वरकों के अनेक दुष्परिणाम हमारे सामने हैं। उन्होंने कहा कि जल संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए गांव का पानी, गांव में ही रुके, ऐसे प्रयास किए जाएं। उन्होंने शून्य खर्च आधारित खेती के बारे में बताया और कहा कि यह भूमि अन्नपूर्णा है। सकारात्मक तरीके से इसका जितना उपयोग करेंगे, यह अधिक लाभ देगी।

राज्यपाल ने कहा कि एक दौर था जब देश के 40 करोड़ लोगों का पेट भरने के लिए हमारे पास पर्याप्त अन्न नहीं था। इस दौर में हमारे अन्नदाताओं ने भरपूर मेहनत की। इसकी बदौलत आज 140 करोड़ देशवासियों का पेट भरने के



आयोजित किया जाएगा। इसमें उद्योग, साहित्य, कृषि, पत्रकारिता आदि के क्षेत्र में डिलेखनीय कार्य करने वाली प्रतिभाओं को सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने श्रीअन्न (मोटे अनाज) को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता जताई और कहा कि राजस्थानी वनस्पति फोगला, केर, सांगरी और तुंबा आदि पर अनुसंधान किए जाने की जरूरत है। केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ

चौधरी ने कहा कि प्राकृतिक खेती हमारी प्राचीनतम पद्धति है। यह भूमि का प्राकृतिक स्वरूप बनाए रखती है। इस खेती में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग नहीं किया जाता है। उन्होंने कहा कि आज रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध उपयोग के कारण भूमि की उर्वरा शक्ति प्रभावित हो रही है। मानव के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का स्वप्न है कि देश का किसान खुशहाल हो। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरुण कुमार ने स्वागत उद्घोषणा की। पूर्व में राज्यपाल बागडे ने 'फसल अवशेष प्रबंधन हेतु स्टबल चॉपर सह स्प्रेडर' पुस्तक का विमोचन किया। बागडे ने विश्वविद्यालय द्वारा विकसित स्टबल चॉपर सह स्प्रेडर का लोकार्पण किया।

## हार्ट अटैक से 27 साल के इंजीनियर की मौत

इबादत न्यूज

कोटा, 29 अगस्त। कोटा में 27 साल के इंजीनियर की हार्ट अटैक से मौत हो गई। वह खाना खाने के बाद बॉक कर रहे थे। इसी दौरान उनकी तबीयत बिगड़ गई। परिजन उन्हें लेकर हॉस्पिटल पहुंचे, जहां डॉक्टर ने मृत घोषित कर दिया।

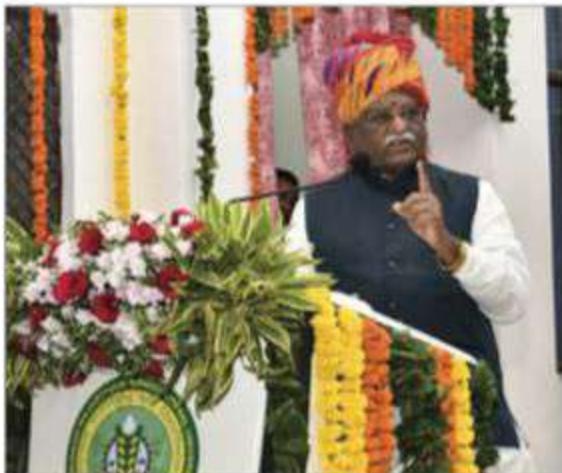
मामला शहर के महावीर नगर विस्तार योजना का बुधवार रात 10 बजे का है। वह आरएस एग्जाम की तैयारी कर रहे थे। महावीर नगर थाना के हेड कॉन्स्टेबल अजित ने बताया-

आनंद गौतम रात करीब 10 बजे बॉक करने निकले थे। इसी दौरान अपने चाचा राजेंद्र गौतम के घर में छत पर बने टॉयलेट में फ्रेश होने गए। वहां उन्हें घबराहट होने लगी। पसीना आने लगा। आनंद ने पिता महेंद्र गौतम को मोबाइल फोन से कॉल कर तबीयत खराब होने की जानकारी दी। परिवार के लोग राजेंद्र के घर पहुंचे और आनंद को प्राइवेट हॉस्पिटल लेकर गए। डॉक्टर ने साइलेंट अटैक से मौत होना बताया। परिवार के लोगों ने बताया कि आनंद को कोई बीमारी नहीं थी। कोटा से मैकेनिकल इंजीनियरिंग की

पढ़ाई पूरी करने के बाद आनंद ने आरएस एग्जाम की तैयारी शुरू की थी। उन्होंने जयपुर में रहकर एक कोचिंग सेंटर से आरएस-प्री की तैयारी की थी। पांच महीने पहले वह कोटा लौट आए। यहां घर पर रहकर तैयारी कर रहे थे। चाचा राजेंद्र गौतम और आनंद के घर की दूरी 80 मीटर ही है। आनंद के तीन बहनें हैं, जिनकी शादी हो चुकी हैं। पिता बूंदी जिले के अरनेठा ग्राम पंचायत में दो बार सरपंच रह चुके हैं। दादा बाबूलाल गौतम बूंदी के पूर्व जिला प्रमुख रह चुके हैं।

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में प्राकृतिक खेती पर जागरूकता विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी

# स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती जरूरी रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध उपयोग से कैंसर रोगियों की संख्या बढ़ रही है-राज्यपाल



बीकानेर (हुक्मनामा समाचार)। राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने कहा कि स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती अपनाएं जाने की जरूरी है। उन्होंने कहा कि रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से जमीन की उर्वरा शक्ति यही रही है। इनके अंधाधुंध उपयोग से कैंसर जैसे असाध्य रोगियों की संख्या भी बढ़ रही है। राज्यपाल बागडे गुरुवार को कृषि विश्वविद्यालय के विद्या मंडप में प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे।

बागडे ने कहा कि पचास साल पहले तक कोई भी रासायनिक उर्वरकों का उपयोग नहीं करता था। परिस्थितिवश इनका उपयोग शुरू हुआ। आज इन उर्वरकों के अनेक दुष्परिणाम हमारे सामने हैं। उन्होंने कहा कि जल संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए गांव का पानी, गांव में ही रुके, ऐसे प्रयास किए जाएं। उन्होंने



शून्य खर्च आधारित खेती के बारे में बताया और कहा कि यह भूमि अनपूर्णा है। सकारात्मक तरीके से इसका जितना उपयोग करेंगे, यह अधिक लाभ देगी।

राज्यपाल ने कहा कि एक दौर था जब देश के 40 करोड़ लोगों का पेट भरने हमारे पास पर्याप्त अन नहीं था। इस दौर में हमारे अनन्दाताओं ने भरपूर मेहनत की। इसकी बदौलत आज 140 करोड़ देशवासियों का पेट भरने के बाद भी हमारे अन के भंडार भरे हुए हैं। उन्होंने कृषि के साथ गोपालन करने का आह्वान किया। प्रदेश की गो आधारित सहकारिता कार्यों की सराहना की और कहा कि कृषि और पशुपालन से किसानों की आय बढ़ेगी। राज्यपाल

ने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित संगोष्ठी से प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहन मिलेगा। उन्होंने ऐसे आयोजन समय-समय पर आयोजित करने का आह्वान किया।

केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि कृषि और कृषक कल्याण, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सर्वोच्च प्राथमिकता है। मोदी के नेतृत्व में किसानों का सम्मान बढ़ा है। उन्होंने रासायनिक खेती के दुष्प्रभावों के बारे में बताया और कहा कि हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। उन्होंने स्वामी केशवानंद के शिक्षा के विकास में दिए गए योगदान को याद किया और कहा कि 9 दिसंबर 1925 को महाराजा गंगासिंह ने नहर लाने की कार्ययोजना

शुरूआत की। उसके सौ वर्ष पूर्ण होने पर बीकानेर के सुशासन के सौ वर्ष कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इसमें उद्योग, साहित्य, कृषि, पत्रकारिता आदि के क्षेत्र में उल्लाखेनीय कार्य करने वाली प्रतिभाओं को सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने श्रीअनं (मोटे अनाज) को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता जताई और कहा कि राजस्थानी बनस्पति फोगला, केर, सांगरी और तुंबा आदि पर अनुसंधान किए जाने की जरूरत है।

केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने कहा कि प्राकृतिक खेती हमारी प्राचीनतम पद्धति है। यह भूमि का प्राकृतिक स्वरूप बनाए रखती है। इस खेती में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग नहीं किया जाता है। उन्होंने कहा कि आज रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध उपयोग के कारण भूमि की उर्वरा शक्ति प्रभावित कर रहा है।

मानव के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का स्वप्न है कि देश का किसान खुशहाल हो। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरुण कुमार ने स्वागत उद्घोषित किया।

पूर्व में राज्यपाल बागडे ने फसल अवशेष प्रबंधन हेतु स्टबल चॉपर सह स्प्रेडर पुस्तक का विमोचन किया। बागडे ने विश्वविद्यालय द्वारा विकसित स्टबल चॉपर सह स्प्रेडर का लोकार्पण किया और विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

# स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती जरूरी: राज्यपाल

**स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में 'प्राकृतिक खेती पर जागरूकता' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी, राज्यपाल बोले-रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध उपयोग से कैंसर रोगियों की बढ़ रही संख्या**

जयपुर. राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने कहा कि स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती अपनाए जाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से जमीन की उर्वरा शक्ति क्षीण हो रही है। इनके अंधाधुंध उपयोग से कैंसर जैसे असाध्य रोगियों की संख्या भी बढ़ रही है। राज्यपाल बागडे गुरुवार को बीकानेर में कृषि विश्वविद्यालय के विद्या मंडप में 'प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे। बागडे ने कहा कि पचास साल पहले तक कोई भी रासायनिक उर्वरकों का उपयोग नहीं करता था। परिस्थितिवश इनका उपयोग शुरू हुआ। आज इन उर्वरकों के अनेक दुष्परिणाम हमारे सामने हैं। उन्होंने



कहा कि जल संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए गांव का पानी, गांव में ही रुके, ऐसे प्रयास किए जाएं। उन्होंने शून्य खर्च आधारित खेती के बारे में बताया और कहा कि यह भूमि अन्नपूर्णा है। सकारात्मक तरीके से इसका जितना उपयोग करेंगे, यह अधिक लाभ देगी। राज्यपाल ने कहा

कि एक दौर था जब देश के 40 करोड़ लोगों का पेट भरने के लिए हमारे पास पर्याप्त अन्न नहीं था। इस दौर में हमारे अन्नदाताओं ने भरपूर मेहनत की। इसकी बदौलत आज 140 करोड़ देशवासियों का पेट भरने के बाद भी हमारे अन्न के भंडार भरे हुए हैं। उन्होंने कृषि के साथ गोपालन करने का

आह्वान किया। प्रदेश की गौ आधारित सहकारिता कार्यों की सराहना की और कहा कि कृषि और पशुपालन से किसानों की आय बढ़ेगी। राज्यपाल ने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित संगोष्ठी से प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहन मिलेगा। उन्होंने ऐसे आयोजन समय-समय पर आयोजित करने का आह्वान किया।

केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि कृषि और कृषक कल्याण, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सर्वोच्च प्राथमिकता है। मोदी के नेतृत्व में किसानों का सम्मान बढ़ा है। उन्होंने रासायनिक खेती के दुष्प्रभावों के बारे में बताया और कहा कि हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। उन्होंने स्वामी केशवानंद के शिक्षा के विकास में दिए... शेष पेज 9 पर

**स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विवि में 'प्राकृतिक खेती पर जागरूकता'**  
**विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित, राज्यपाल ने किया उद्घाटन**

# रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से कैंसर रोगी बढ़ रहे : बागडे

बीकानेर(सीमा सन्देश)।

राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने कहा है कि स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती अपनाएं जाने की जरूरत है। रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से जमीन की उर्वरा शक्ति क्षीण हो रही है। इनके अंधाधुंध उपयोग से कैंसर जैसे असाध्य रोगियों की संख्या भी बढ़ रही है। बागडे गुरुवार को यहां कृषि विवि के विद्या मंडप में 'प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को सम्बोधित कर रहे थे। बागडे ने कहा कि पचास साल पहले तक कोई भी रासायनिक उर्वरकों का उपयोग नहीं करता था। परिस्थितिवश इनका उपयोग शुरू हुआ। आज इन उर्वरकों के अनेक दुष्परिणाम हमारे सामने हैं। उन्होंने कहा कि जल संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए गांव का पानी, गांव में ही रुके, ऐसे प्रयास किए जाएं। उन्होंने शून्य खर्च आधारित खेती के बारे में बताया और कहा कि यह भूमि अन्नपूर्णा है। सकारात्मक तरीके से इसका जितना उपयोग करेंगे, यह अधिक लाभ देगी।

राज्यपाल ने कहा कि एक दौर था जब देश के 40 करोड़ लोगों का पेट भरने के लिए हमारे पास पर्याप्त अन्न नहीं था। इस दौर में हमारे अनन्दाताओं ने भरपूर मेहनत की। इसकी बदौलत आज 140 करोड़ देशवासियों का पेट भरने के बाद भी हमारे अन्न के भंडार भरे हुए हैं। उन्होंने कृषि के साथ गोपालन करने का आह्वान किया। प्रदेश के गो आधारित सहकारिता कार्यों की सराहना की और कहा कि कृषि और पशुपालन से किसानों की आय बढ़ेगी। राज्यपाल ने कहा कि विवि द्वारा आयोजित संगोष्ठी से प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहन मिलेगा। उन्होंने ऐसे आयोजन समय-समय पर आयोजित करने का आह्वान किया। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अरुण कुमार ने स्वागत उद्घोषन दिया। बागडे ने 'फसल अवशेष प्रबंधन हेतु



स्टबल चॉपर सह स्प्रेडर' पुस्तक का विमोचन किया और विवि द्वारा विकसित स्टबल चॉपर सह स्प्रेडर का लोकार्पण किया और प्रदर्शनी का अवलोकन किया। श्रीडूंगरगढ़ विधायक ताराचंद सारस्वत, महाराजा गंगासिंह विवि के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित, जिला कलक्टर नम्रता वृष्णि, पुलिस अधीक्षक तेजस्विनी गौतम, राजूवास के पूर्व कुलपति प्रो. एके गहलोत, विवि कुलसचिव डॉ. देवाराम सैनी सहित किसान, कृषि वैज्ञानिक और विद्यार्थी मौजूद रहे।

## राजस्थानी वनस्पति पर अनुसंधान की जरूरत : केन्द्रीय मंत्री मैथवाल

केन्द्रीय मंत्री अर्जुन राम मैथवाल ने कहा कि कृषि और कृषक कल्याण, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सर्वोच्च प्राथमिकता है। मोदी के नेतृत्व में किसानों का सम्मान बढ़ा है। उन्होंने कहा कि हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। उन्होंने स्वामी केशवानंद के शिक्षा के विकास में दिए गए योगदान को याद किया और कहा कि 9 दिसंबर 1925 को महाराजा गंगासिंह ने नहर लाने की कार्ययोजना शुरूआत की। उसके सौ वर्ष पूर्ण

होने पर 'बीकानेर के सुशासन के सौ वर्ष' कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इसमें उद्योग, साहित्य, कृषि, प्रकारिता आदि के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाली प्रतिभाओं को सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने श्रीअञ्ज (मोटे अनाज) को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता जताई और कहा कि राजस्थानी वनस्पति फोगला, केर, सांगरी और तुंबा आदि पर अनुसंधान किए जाने की जरूरत है।

## प्राकृतिक खेती हमारी प्राचीनतम पद्धति : कृषि राज्यमंत्री चौधरी

केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने कहा कि प्राकृतिक खेती हमारी प्राचीनतम पद्धति है। यह भूमि का प्राकृतिक स्वस्थ बनाए रखती है। इस खेती में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग नहीं किया जाता है। आज रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध उपयोग के कारण भूमि की उर्वरा शक्ति प्रभावित हो रही है। मानव के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का ख्वज है कि देश का किसान खुशहाल हो।

# एसकेआरएयू : प्राकृतिक खेती पर राष्ट्रीय संघोषणी का राजस्थान के राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने किया शुभारंभ

स्वच्छ पर्यावरण और अच्छे स्वास्थ्य के लिए रासायनिक खाद मुक्त कृषि को बढ़ावा देने की आवश्यकता :

हरिभाऊ बागड़े, राज्यपाल

सीमान्त रक्षक न्यूज

बीकानेर, 29 अगस्त। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में गुरुवार को प्राकृतिक खेती पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ मुख्य अतिथि राजस्थान के राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े, विशिष्ट अतिथि केंद्रीय कानून एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल, केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ अरुण कुमार ने की। कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित विद्या मंडप सभागार में संगोष्ठी के शुभारंभ अवसर पर श्रीहंगरगढ़ विधायक ताराचंद सारस्वत, महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ मनोज दीक्षित, राजुवास के पूर्व



कुलपति डॉ ए के गहलोत, जिला कलेक्टर श्रीमती नम्रता वृष्णि, एसपी श्रीमती तेजस्वी गौतम, कृषि विश्वविद्यालय रजिस्ट्रार देवराम सेनी, वित्त नियंत्रक राजेंद्र कुमार खत्री सहित विवि के सभी ढीन, डायरेक्टर्स समेत अन्य कार्मिक, किसान, कृषक महिलाएँ और स्टूडेंट्स मौजूद रहे। राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर द्वारा विकसित इस मशीन को भारत सरकार और यूके से पेटेंट भी मिल चुका है। यह मशीन उत्तर भारत में पराली जलाने की समस्या से निजात दिलाने में सहायक सिद्ध होगी। कम लागत की इस मशीन का कृषि विश्वविद्यालय जल्द ही बड़े स्तर पर व्यावसायिक उत्पादन भी शुरू करने जा रहा है। समारोह को संबोधित करते हुए राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने कहा कि स्वच्छ पर्यावरण और अच्छे स्वास्थ्य के लिए रासायनिक खाद मुक्त कृषि को बढ़ावा देने की सख्त आवश्यकता है। रासायनिक खाद के

अंधाधुंध प्रयोग से जमीन के जीवाणु, असंख्य पक्षी विलुप्त हो चुके हैं और कैंसर रोगी बढ़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि इसी तरह अगर फसलों में रासायनिक खाद का इस्तेमाल होता रहा तो एक रिपोर्ट के मुताबिक भारत में 5 में से एक व्यक्ति को कैंसर होगा। यानि करीब 28 करोड़ लोग कैंसर से ग्रसित होंगे। ऐसे स्थिति में बड़ी संख्या में अस्पताल और डॉक्टर कहां से लाएंगे। उन्होंने किसानों को खेती के साथ पशुपालन को बढ़ावा देकर समन्वित कृषि प्रणाली को अपनाने की बात कही। साथ ही बारिश के पानी को गांव की सीमा के अंदर ही रोकने और सहेजने की आवश्यकता बताई। प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय द्वारा राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन को लेकर साधुवाद देते हुए कहा कि इस आयोजन से किसानों में जागरूकता आएगी। केंद्रीय कानून एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान के साथ जय अनुसंधान का नारा दिया है। भारत सरकार खेती को सर्वोच्च

प्राथमिकता दे रही है। मेघवाल ने अल्प जिलाई बाई द्वारा गाए गीत खोखा म्हाने लाए चौखा, खेजड़लियां रा खजूर, फोगले रो करा म्हे रायतो, जिमां रोटी चूर गाकर प्राकृतिक खेती और श्रीअन्न का बढ़ावा देने और रोटी चूर के जीमने की बात कही। साथ ही बताया कि वर्ष 2025 में प्राकृतिक खेती करने वाले 100 किसानों को पुरस्कृत किया जाएगा। मेघवाल ने स्वामी केशवानंद जी के शिक्षा में योगदान को भी याद किया। केन्द्रीय कृषि विकासन के लिए कल्याण राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने कहा कि भारत सरकार प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने जा रही है। अगर किसी किसान के पास 5 एकड़ भूमि है और उसमें से एक एकड़ भूमि पर वह प्राकृतिक खेती करता है तो उसे 20 हजार रुपए का इनोशियटिव दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि देश जब आजाद हुआ तो देश में अन्न की कमी थी। हरित क्रांति लाई गई। कृषि वैज्ञानिकों ने बहुत अच्छे कार्य किया लेकिन अब खेतों में रासायनिक खाद के अंधाधुंध प्रयोग से भूमि बंजर हो रही है। जिस तरह एक नशा करने वाला बिना नशे के नहीं चलता, उसी

प्रकार धरती को भी रासायनिक खाद का एडिक्ट बना दिया गया है। अगर मानव को बचाना है तो प्राकृतिक खेती की ओर जाना होगा। इससे पूर्व कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कार्यक्रम में स्वागत भाषण देते हुए कहा कि प्राकृतिक खेती एक ऐसा तरीका है जिसमें रासायनिक उत्पादकों और कीटनाशकों का उपयोग नहीं किया जाता है और पर्यावरण के अनुकूल टिकाऊ कृषि को प्रोत्साहन दिया जाता है। फसल अवशेष प्रबंधन को लेकर कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित स्टबल चॉपर कम स्प्रेडर मशीन के लोकार्पण को लेकर कहा कि यह कम लागत वाली मशीन उत्तर भारत में पराली जलाने की समस्या से निजात दिलाने में सहायक सिद्ध होगी। इससे मृदा में ऑर्गेनिक कार्बन की मात्रा बढ़ेगी और मिट्टी की जलधारण क्षमता में सुधार होगा। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ पी.के. यादव ने धन्यवाद दिया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय कुलगीत, विश्वविद्यालय प्रगति के सोपान का वीडियो प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम में मंच संचालन डॉ मंजू राठौड़ और डॉ सुशील ने किया।

# प्राकृतिक खेती अपनानी होगी : बागड़े

## राज्यपाल की दो दिवसीय बीकानेर यात्रा : रासायनिक कृषि को बताया स्वास्थ्य के लिए खतरा

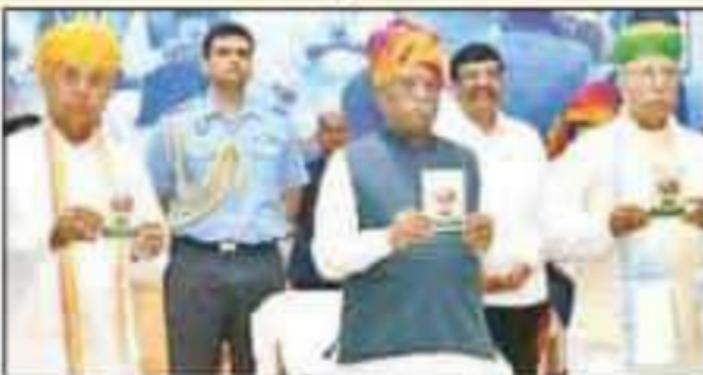
बीकानेर, 23 अगस्त (प्रेम) : राज्यपाल इरिपड़ बागड़े ने कहा कि प्राकृतिक खेती और जमीन को उपचारक शामला प्रधारित हो रही है।

रासायनिक खेती से जीवायनिक खेती रही है। नदूनदम लागत, अधिक उत्पन्न, उच्च गुणवत्ता और स्वस्थ फर्मावर्तन के लिए प्राकृतिक खेती की अपनाना जरूरी है। आज रासायनिक उत्पादकों के उपयोग से जमीन की उत्तरी राजित प्रभाषित हो रही है।

भिन्नों के मित्र किटाणु और मृश्य जीवों को मंसुख में नगरण रह रहा है। इन उत्पादकों के चलते आज केवल जैसे उत्पाद्य रूप के रोगियों की मरणों संघर्ष जनरातर बढ़ रही है। राज्यपाल बागड़े गुरु जार को कृषि विभागीय विभाग के विद्या भंडप में 'प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कामकाज' विषयक दो विवरण

खेतीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे।

30 साल पहले नहीं होता था : बागड़े ने कहा कि प्रथम माल पहले लक्क कोइ भी रासायनिक उत्पादकों का उपयोग नहीं करता था। पर्यायालैजिट्स इनका उपयोग शुरू हुआ। आज इन उत्पादकों के अनेक दुष्परिणाम हमारे सामने हैं। आज इंसानों की पुरानावृत्ति को छोड़ता है। एक चार लिंग हम



**बीकानेर :** कृषि विभिन्न के विद्या भंडप में ज्ञापोलित कामकाज में मंचन्य राज्यपाल बागड़े, केंद्रीय मंत्री मेघालाल, भगवीर चौधरी व अन्य अतिथि।

**आज अन्ध के भाङ्ग भर :** राज्यपाल ने कहा कि एक हीर भी, जब देश के 40 करोड़ लोगों का पेट भरने हमारे यास पर्याप्त अन्धन ही था। अब अन्धदाताओं ने मेहनत की तो 140 करोड़ देशवासियों का पेट भरने के लिए भी अन्ध के भंडार भरे हैं।

**किसानों जा भग्नान बढ़ा :** केंद्रीय विभिन्न एवं न्याय मंत्री वर्षान्त राम मेघालाल ने कहा कि कृषि और कृषक कल्याण, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को महोन्नत द्वारा विभिन्नता है। योद्धों के देश में किसानों का भग्नान बढ़ा है। उन्होंने रासायनिक खेती का उपयोग नहीं किया जाता है। इससे पहले विभिन्न के कृत्तियां ही, अरण जूमर ने अतिथियों का व्याप्ति किया।

# जलतोदीप

प्रदेश \* देश \*

खामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में 'प्राकृतिक खेती पर जागरूकता' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी

## रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध उपयोग से कैंसर रोगियों की संख्या बढ़ रही है : राज्यपाल

■ राज्यपाल ने कहा, स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती जरूरी

■ जलतोदीप लिंग, बीकानेर

राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने कहा कि स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती अपनाएं जाने की जरूरी है। उन्होंने कहा कि रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से जमीन की उर्वरा शक्ति क्षीण हो रही है। इनके अंधाधुंध उपयोग से कैंसर जैसे असाध्य रोगियों की संख्या भी बढ़ रही है।

राज्यपाल बागडे गुरुवार को कृषि विश्वविद्यालय के विद्या मंडप में 'प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे।

बागडे ने कहा कि पचास साल पहले तक कोई भी रासायनिक उर्वरकों का उपयोग नहों करता था।



परिस्थितिवश इनका उपयोग शुरू हुआ। आज इन उर्वरकों के अनेक दुष्परिणाम हमारे सामने हैं। उन्होंने कहा कि जल संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए गांव का पानी, गांव में ही रुके, ऐसे प्रयास किए जाएं। उन्होंने शुन्य खर्च आधारित खेती के बारे में बताया और कहा कि यह भूमि अन्पूर्ण है। सकारात्मक तरीके से इसका जितना उपयोग करेंगे, वह अधिक लाभ देंगे।

राज्यपाल ने कहा कि एक दौर

था जब देश के 40 करोड़ लोगों का पेट भरने हमारे पास पर्याप्त अन्न नहीं था। इस दौर में हमारे अनन्दाताओं ने भरपूर मेहनत की। इसकी बदौलत आज 140 करोड़ देशवासियों का पेट भरने के बाद भी हमारे अन्न के भंडार भरे हुए हैं।

उन्होंने कृषि के साथ गोपालन करने का आह्वान किया। प्रदेश को गौ आधारित सहकारिता कार्यों की सराहना की और कहा कि कृषि और पशुपालन से किसानों की आय

बढ़ेगी। राज्यपाल ने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित संगोष्ठी से प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहन मिलेगा। उन्होंने ऐसे आयोजन समय-समय पर आयोजित करने का आह्वान किया।

केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि कृषि और कृषक कल्याण, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सर्वोच्च प्राथमिकता है। मोदी के नेतृत्व में किसानों का सम्मान बढ़ा है।

उन्होंने रासायनिक खेती के दुष्परिणामों के बारे में बताया और कहा कि हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। उन्होंने स्वामी केशवानंद के शिक्षा के विकास में दिए गए योगदान को याद किया और कहा कि 9 दिसंबर 1925 को महाराजा गंगासिंह ने नहर लाने की कार्यव्योजना शुरूआत की। उसके सौ वर्ष पूर्ण होने पर 'बीकानेर के मुशासन के सौ वर्ष' कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा।

# न्यूनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता और स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती अपनाना जरूरी : राज्यपाल बागडे

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम राष्ट्रीय संगोष्ठी प्रारंभ

बीकानेर (ओम दैया)।

राज्यपाल श्री हरि भाऊ बागडे ने कहा कि न्यूनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता और स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती को अपनाना जरूरी है। उन्होंने चिंता जताते हुए कहा कि आज रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से जमीन की उर्वरा शक्ति प्रभावित हुई है। मिट्टी के मित्र किटाणु और सूक्ष्म जीवों की संख्या में नगण्य रह गई है। इन उर्वरकों के कारण आज केंसर जैसे असाध्य रोग के रोगियों की संख्या लगातार बढ़ रही है। राज्यपाल श्री बागडे गुरुवार को कृषि विश्वविद्यालय के विद्या मंडप में प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे। श्री बागडे ने कहा कि पचास साल पहले तक



कोई भी रासायनिक उर्वरकों का उपयोग नहीं करता था। परिस्थितिवश इनका उपयोग शुरू हुआ। आज इन उर्वरकों के अनेक दुष्परिणाम हमारे सामने हैं। उन्होंने कहा कि आज इतिहास की पुनरावृत्ति की जरूरत है और जरूरी है की एक बार फिर हम प्राकृतिक खेती की ओर अग्रसर हों। उन्होंने जल संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता देने का आह्वान किया और कहा कि गांव का पानी, गांव में ही रुके, ऐसे प्रयास किए जाएं। उन्होंने शून्य खर्च आधारित खेती के

बारे में बताया और कहा कि यह भूमि अन्नपूर्णा है। सकारात्मक तरीके से इसका जितना उपयोग करेंगे, यह अधिक लाभ देगी। राज्यपाल ने कहा कि एक दौर था जब देश के 40 करोड़ लोगों का पेट भरने हमारे पास पर्याप्त अन्न नहीं था। इस दौर में हमारे अन्नदाताओं ने भरपूर मेहनत की। इसकी बदौलत आज 140 करोड़ देशवासियों का पेट भरने के बाद भी हमारे अन्न के भंडार भरे हुए हैं। उन्होंने कृषि के साथ गोपालन करने का आह्वान किया। प्रदेश की गो आधारित

सहकारिता कार्यों की सराहना की और कहा कि कृषि और पशुपालन से किसानों की आय बढ़ेगी। राज्यपाल ने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित संगोष्ठी से प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहन मिलेगा। उन्होंने ऐसे आयोजन समय-समय पर आयोजित करने का आह्वान किया। केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि कृषि और कृषक कल्याण, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की सर्वोच्च प्राथमिकता है। श्री मोदी के नेतृत्व में किसानों का सम्मान बढ़ा है। उन्होंने रासायनिक खेती के दुष्प्रभावों के बारे में बताया और कहा कि हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। उन्होंने स्वामी केशवानंद के शिक्षा के विकास में दिए गए योगदान को याद किया और कहा कि 9 दिसंबर 1925 को महाराजा गंगासिंह ने नहर लाने की कार्ययोजना शुरूआत की। उसके सौ वर्ष पूर्ण होने पर बीकानेर के सुशासन के सौ वर्ष कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा।

# प्राकृतिक खेती पर संगोष्ठी के समापन समारोह में गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवब्रत होंगे मुख्य अतिथि

**बीकानेर (नि.सं.)**। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में प्राकृतिक खेती पर चल रही दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन शुक्रवार को होगा संगोष्ठी संयोजक एवं कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ पी.के.यादव ने बताया समापन समारोह के मुख्य अतिथि गुजरात के राज्यपाल माननीय श्री आचार्य देवब्रत और विशिष्ट अतिथि पूर्व कैबिनेट मंत्री श्री देवी सिंह भाटी और गुजरात प्राकृतिक खेती विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ सी.के.टिम्बड़िया होंगे। ये अतिथि दोपहर करीब 3 बजे संगोष्ठी के समापन समारोह में शिरकत करेंगे समापन समारोह में स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर व गुजरात के प्राकृतिक खेती विज्ञान विश्वविद्यालय के मध्य एमओयू भी होगा। साथ ही पोस्टर प्रस्तुति में उत्कृष्ट प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र का वितरण किया जाएगा। कार्यक्रम सचिव डॉ वी.एस.आचार्य ने बताया ने बताया कि संगोष्ठी के दूसरे दिन समापन समारोह से पूर्व सुबह 10 बजे से दोपहर 12.30 तक और 12.30 से दोपहर 2 बजे तक दो तकनीकी सत्रों का आयोजन किया जाएगा। प्राकृतिक खेती पर प्रशिक्षण विषय पर प्रथम तकनीकी सत्र का आयोजन महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ मनोज दीक्षित की अध्यक्षता और केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान के निदेशक डॉ जगदीश राणे की सह अध्यक्षता में विद्या मंडल सभागार में ही आयोजित किया जाएगा। जिसमें प्राकृतिक खेती प्रशिक्षण, बीज प्रबंधन और कीट नियंत्रण के सरल उपाय, भूमि सुपोषण व गोबर, गोमूत्र प्रबंधन पर विषय विशेषज्ञ जानकारी देंगे। डॉ आचार्य ने बताया कि दोपहर 12.30 बजे से 2.00 बजे तक प्राकृतिक खेती परिणाम, कृषक अनुभव, कृषक संवाद विषय पर आयोजित होने वाले तकनीकी सत्र की अध्यक्षता राजुवास के पूर्व कुलपति डॉ ए.के.गहलोत और सह अध्यक्षता प्रधान वैज्ञानिक डॉ आर.के.सावल करेंगे।

## प्राकृतिक खेती नहीं करने से जमीन की क्षमता कमज़ोर हुई : राज्यपाल

■ बीकानेर (R.)

राज्यपाल द्वीप भाऊ चांगड़े ने कहा कि न्यूनतम लकड़ात, अधिक उपयोग, उच्च गुणवत्ता और स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्राकृतिक खेती को अपनाया जरूरी है। उन्होंने कहा कि आज रामायणिक उर्वरकों के उपर्योग से जमीन को उर्जा जानकी प्रभावित हुई है। यद्युपि मैंने किटिअण और सूख्य जीवों की संख्या में घटाव यह गहरा है। इन उर्वरकों के कारण आज विदेश से अत्यधिक धोने के दोषियों की संख्या लगातार बढ़ रही है।

राज्यपाल चांगड़े गुरुवार को कृषि विधिविद्यालय के विद्या मंडप में 'प्राकृतिक खेती पर जगद्वकाता कार्यक्रम' विषयक दो दिवारीय राष्ट्रीय संग्रहीतों के उद्घाटन मठ को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पश्चास साल पास तक कोई भी रामायणिक उर्वरकों का उपर्योग नहीं करता था। पर्यावरणिक इनका उपर्योग मूल है। आज इन उर्वरकों के अनेक दुष्परिणाम उम्मीद सुनाये हैं। आज इतिहास की चुनरात्सुकी की जगत है और जहांसे ही कोई जाग फिर हम प्राकृतिक खेती की ओर आसमां हैं। उन्होंने जल संरक्षण को सामाजिक प्रार्थनिकाता देने का उद्देश्य विद्या और कानून कि गर्व का पानी, गर्व में दी खेत, ऐसे प्रयोग किए जाएं। उन्होंने सूख खर्च आपातिक खेती के बारे में जागरूक और कहा कि यह भूमि अपर्णा है। सकारात्मक तरीके से इसका



जितना उपर्योग करेंगे, वह अधिक लाभ देगी।

राज्यपाल ने कहा कि एक दीर या जब देस के 40 करोड़ लोगों का यह भूमि अपर्णा है।

यात्री आज वही था। इस दीर में हमारे अवदाताम्भों में भरपूर मेहनत की। इसके बहुतला आज 140 करोड़ देसवासियों का है।

परने के बाद भी दूसरों आज के खंडा भी हुए हैं।

कौटीय विधि एवं जलव यंत्रों द्वारा हम देखताने वे कहा कि चूधि और दूसरा बान्धवान, जलसंग्रहीत जींड मोटी की सामाजिक प्रार्थनिकाता है। मोटी के जैविक में किसानों का यान्मन बढ़ा है। उन्होंने रामायणिक खेती के दुष्परिणामों का यारी में जलता और कहा कि इसे प्राकृतिक खेती की ओर निर्दित होता। उन्होंने मोटी के लकड़ान्द के लिख में एंटे गए योगदान को यह किया और कहा कि 9 दिसंबर 1925 की यान्मन के योगदान में वहाँ लगाने की कार्यपीलता तुक्राता की। उसके भी यह पूर्ण होने पर धूमधारी के सुखान के भी यर्थे कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इसमें उद्घोष, साहित्य, कथि, प्रवक्तृता आदि के लोक में उद्घोषित कार्य करने वाली प्रीतिपात्रों की सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने लोकां (मोटे अन्दाज) की प्रोत्साहित करने की उद्देश्यवाक्ता जारी और कहा कि रामायणीय वर्षप्रति जोगता, केर, सांघरी और तुका आदि पर अद्युत्तम किए जाने की ज़रूरत है।

कौटीय चूधि राजन भूमि पानीराज भूपरी ने कहा कि प्राकृतिक खेती दम्भी दम्भी प्रार्थनाय पहुँचती है। यह भूमि का प्राकृतिक स्वरूप बहाल रहती है। इस संभी में रामायणिक उर्वरकों और दूसरोंको का उपर्योग वही किया जाता है। विधिविद्यालय के कूलवती और अब्द कुमार ने शाहगत किया।